डॉ. ज्ञानराज काशिनाथ गायकवाड
एम्. ए. पीएच. डी.
रीडर एवं अध्यक्ष,
पदवी तथा पदव्युत्तर हिन्दी-विभाग
श्री. शिवाजी महाविद्यालय, बार्शी
[जिला - सोलापुर] - ४१३ ४११

// प्रमाण-पत्र //

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि, श्री. दिलीप कोंडीबा कसबे द्वारा शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल् उपाधि के हेतु प्रस्तुत लघु- शोध प्रबंध " रांगेय राघव की प्रिय कहानियाँ : एक मीमांसा। " [रांगेय राघव द्वारा सम्पादित " मेरी प्रिय कहानियाँ " इस पुस्तक के सन्दर्भ में] मेरे मार्गदर्शन में पूरा कर दिया गया है। प्रस्तुत लघु - शोध प्रबंध पूर्व-योजना के अनुसार पूरा हुआ है। इस शोध - प्रबंध का प्रत्येक पृष्ठ मैंने पढा है और उसे विषयानुकूल पाया है।

मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि, इस शोध-प्रबंध में तथ्यों को प्रस्तुत करते हुए जो विवेचन - विश्लेषण किया गया है, वह सब मेरे निर्देशन के अनुसार सही है।

अत: मैं इसे परीक्षार्थ प्रस्तुत करने की संस्तुति करता हूँ।

बार्शी

दिनांक : १६.५.१९९४

16,5,94

[ज्ञा.का. गायकवाड]
शोध - निर्देशक

श्री• दिलीप कोंडीबा कसबे
मु•पो• मेडशिंगी
ता• सांगोला•
जि• सोलापूर
४१३३०७

// प्र ति ज्ञा - प त्र //

मैं यह विश्वास के साथ कहता हूँ कि एम्•फिल्• उपाधि के हेतु प्रस्तुत लघु-शोधप्रबंध, " रांगेय राघव की प्रिय कहानियाँ : एक मीमांसा । " [रांगेय राघव द्वारा सम्पादित " मेरी प्रिय-कहानियाँ " इस पुस्तक के सन्दर्भ में] व्यक्त विचार मेरे अपने हैं तथा विवेचन विश्लेषण का ढंग स्वतंत्र ही है। यह * लघु-शोध प्रबंध इसके पूर्व अन्यत्र किसी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

यह भी घोषीत किया जाता है कि, यह कार्य पूरा करते समय मैंने अपने शोध निर्देशक के मार्गदर्शन के अनुसार प्रामाणिकता से काम किया है।

मेडशिंगी

दिंनाक :१६/५/९४

[दि•को•कसबे]

शोध - कर्ता

// अनुक्रमणिका //

		पृष्ठ क्रमांक
	प्राक्कथन	
प्रथम अध्याय:	रांगेय राघव का व्यक्तिगत परिचय।	१ से १५
द्वितीय अध्याय :	रांगेय राघव का साहित्यगत परिचय।	१६ से ४१
तृतीय अध्याय :	रांगेय राघव का प्रिय कहानी -साहित्य।	४२ से ५४
चतुर्थ अध्याय :	रांगेय राघव की प्रिय कहानिओं का भावपक्ष।	५५ से ७१
पंचम अध्याय :	रांगेय राघव की प्रिय कहानियों का कलापक्ष।	७२ से ९७
छठा अध्याय :	रांगेय राघव की प्रिय कहानियों की महत्वपूर्ण विशेषताएँ।	९८ से १०३
सप्तम अध्याय :	उपसंहार	१०४ से १०६